

॥ अथपंचीकरणप्रारभ्यते ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथपंचिकरणंप्रारभ्यते ॥ ॥ घणादाडानोभर्मथयोजीवने ॥  
 एतलेदेहमांणीपोतेआपने ॥ यासारुफिरेचोरासीलक्षजोनने ॥ फिरफिरीपांमेजन्ममर्णने ॥ १ ॥ ज  
 न्ममरणकीमटलेसेभाई ॥ साधूनोसमागमकीजेजाई ॥ जन्ममरणकीमटलसेमारे ॥ हूंकोणधुंए  
 वोविचारकरेतिवारे ॥ २ ॥ सदुरुकहेस्वस्वरूपजाण ॥ एतलेतारुजन्मटलसेऐजप्रमाण ॥ दा  
 ताराजन्ममरणनोकागदफाटे ॥ सदुरुवचननोविश्वासराखेएमारे ॥ ३ ॥ एकावारनधीलाग  
 सेजाण ॥ एवोवेद्वचनसेप्रमाण ॥ एपंचिकरणनोविचारजेकरे ॥ हमणामुक्तिमकसेताहरे ॥  
 ॥ ४ ॥ एमापंचभूतनोविचारजकह्यो ॥ जुवांजुवांतत्वबतायो ॥ सदगुरुमुखेंसमकिलेजो ॥ तोब्र  
 ह्मस्वरूपामेआजो ॥ ५ ॥ मननिश्चलकरिधारणधरो ॥ श्रवणमननोनिजध्यासकरो ॥ तोसाक्षा  
 त्कारतूंपोतेभाई ॥ एसासंदेहरहनेकाई ॥ ६ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ अहंममेत्यंबद्धोनाहंममे  
 तिसुक्ता ॥ ॥ जाप्रतिअवस्थानेत्रस्थानेत्रस्थान ॥ वैरवरीवाचास्थूलभोगजाण ॥ क्रियाशक्ति  
 रजोगुणमान ॥ अकारमात्राविद्यअभिमान ॥ उपरलापचीशयेंअष्ट ॥ एवातत्वतेत्रीशास्पष्ट ॥

एश्वतूं हृष्टाजाण ॥ एतूक्यमथासेवेदप्रमाण ॥ ॥ ८ ॥ ॥ श्लोक ॥ घटइहोघटाद्दि  
 न्नोसर्वथानघटोयथा ॥ देहदृष्टातथादेहोनाहमित्यवधारयेत् ॥ १ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अ  
 स्तिजायतेवर्द्धतेपरिणतेजोय ॥ अपक्षीयतेविनश्यतिषड्विकारकहिसौय ॥ ९ ॥ एषड्वि  
 कारदेहनेंकहिपोतेनिर्विकार ॥ गुरुवाक्येंविद्यासंकरो ॥ अनुभवमनमेंधार ॥ १० ॥ स्थूलदेहतेहून  
 हीं ॥ सूक्ष्मतरहूजाण ॥ सदुरुकहेततूनहिं ॥ लिंगदृश्यवरवाण ॥ ११ ॥ स्थूलदेहतेहूनहीं ॥ पणसू  
 क्ष्मदेहतेहूंसही ॥ तैथेगुरुकहेतेतूं क्यमथासेभाई ॥ प्रथमनिपठेविचारोजाई ॥ १२ ॥ ॥

आकाशना-	वायुना-	तेजना-	आपना-	पृथ्वीना-	१
काम-	चलन-	क्षुधा-	शक्त-	अस्थी-	१
क्रोध-	बलन-	तृषा-	शोणित-	मांस-	१
शोक-	धावन-	आलस-	छाल-	त्वचा-	१
मोह-	प्रसारण-	निद्रा-	सुत्र-	नाडी-	१
भय-	आकुंचन-	कौत्ति-	सेद-	रोम-	१

	आकाशानोअंत- करण पंचक- कर्त्ता भोक्ता-	वायुनाप्राणपंचक वाहन-	तेजनाज्ञानेंद्रिय पंचक हार-	आपना कर्मेंद्रिय पंचक सेवक-	पृथ्वीनावि पयपंचक भोग-
आकाश	अंतःकरण प्रथमस्फु रण दैवत विष्णु-	ध्यानसर्वांगस्थानमा रे हे छे- कर्मसर्वदेह निसंधीनें वाढे छे-	श्रीचंद्रदेवतेदिशातेनेवडे राक्षसपणथाएछे-तेवि नावेरोशब्दसांभडेनहिं-	चान्चादेवताअग्नीतेनेच उेशब्द बीले छे ते विना मूगोहोसे-	शब्द
वायू	मनःसंकल्पविकल्पात्म कदैवतचंद्रमातृणिकरीसंक ल्पकरेछे-	समाननाभिध्यानमारेहे छेकर्मअन्नरसरोमरोम मांनडीहारांयेप्रवेशकरे छे-	त्वचादैवतवायू तेणेंवडे स्पर्शीशीतोष्णादिजणाए छे मृदु कठिणताजाणें-	पाणीदैवत इंद्रतेनेवडेप राख लेव देव करेछे तेवि नानथाए-	स्पर्शी

तेज .	बुद्धिमिश्चयात्मकदैवत ब्रह्मा तेने करीनें मिश्च येथाएछे-	उदानकरस्थानमारेहे छेकर्मअन्नरसधिसाग करेछेस्वपन हेडलीदेवाडे छे- हिता नाम नाडिमा-	चक्षू दैवत सूर्य तेनें वडे स्वरूप देखेछे- तेविना आंधळो-	पार इंद्र देवता उपेद्र तेने वडे जाववा भाववा ते वि ना पांगळो-	रूप
आप .	चिंतितचितानात्मक दैव तनारायण तेने वडे स्मरण करेछे-	प्राणस्थान हृदयमारेहे कर्म एकवीस हजार छे- शवासोशवास करेछे-	जिह्वा देवता वरुण तेने वडे रसस्वादजाणें ते विना नथाए-	शिश देवता प्रजापति तेने वडे मूत्ररतिभोग थाएछे- तेविना नपुंसक-	रस
पृथ्वी .	अहंकारअहंपणदैवत रुद्र तेने वडे अहंकार थाएछे-	अपानगुदास्थानमारेहे छेकर्म मलमो उत्सर्ग करेछे-	प्राणदेवता अश्विनीकु मार तेने वडे गंध सुगंधदु र्गंधजाणे तेविना नजाणें-	गुरा देवताने ऋतपमते ने वडे मलनोत्सर्ग थारे छे-	गंध-

मात्रातेजसआभिमान ॥ १३ ॥ एवात्रेतीसतत्वजाण ॥ तूयेनादृष्टाच्छोसंजाण ॥ तूदृश्यतत्वनहिं हो  
 ई ॥ न्यारेन्यारोविचारोजोई ॥ १४ ॥ दोहा ॥ घटदृष्टाजोघटनहीं ॥ प्रगदन्यारोदेख ॥ तैसेदेहदृष्टा  
 तूआतमा ॥ न्यारोभिन्नविशेष ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ तृतीयकारणदेहअज्ञान ॥ तेनोतूदृष्टापोतेस्वरू  
 पज्ञान ॥ तेथीविलक्षणन्यारोजाण ॥ तेतूनहींअनुभवप्रमाण ॥ १६ ॥ स्रष्टुमिअवस्थाहदेस्थान ॥  
 पश्यतिवाचाआनंदभोगजाण ॥ तमोगुणवरवाणदृव्यशक्ति ॥ मकारमात्राप्रज्ञाअभिमान ॥ १५ ॥ ए  
 कारणदेहनाआरतत्वकहीं ॥ बीजांतत्वएमानहिं ॥ तूं एनोसाक्षिसच्चिदानंद ॥ नित्यनिरंतरपरमानंद  
 ॥ १६ ॥ श्लोक ॥ अहंसाक्षीतियोविद्याद्विविचैवंपुनःपुनः ॥ सएवमुक्तःसोविद्वानितिचेदांतडिंडि  
 मः ॥ १ ॥ चौपाई ॥ योथोमहाकारणदेहज्ञानस्वरूप ॥ तेनोतूंप्रकाशकशब्दस्वरूप ॥ तेहनातत्वकहं  
 वरवाण ॥ तेतूंप्रवणकरेचिनकान ॥ १७ ॥ तुर्याअवस्थासूर्द्धनीस्थान ॥ परावाचाआनंदावभासभोग-  
 जान ॥ इच्छाशक्तीशुद्धसत्वगुणप्रमाण ॥ अर्धमात्राप्रत्यगात्माअभिमान ॥ १८ ॥ एवामलीनेव्या

सीतत्वकहि ॥ तूं एनोजाणतोस्वप्रकाश ॥ अहंब्रह्मास्मियहदृढहोई ॥ एजसाक्षात्कारकहिचसोई  
 ॥ १९ ॥ श्लोक ॥ अस्तिब्रह्मेतिचेद्देदपरोक्षज्ञानमेवतत् ॥ अहंब्रह्मेतिचेद्देदसाक्षात्कारःसउच्यते-  
 ॥ १ ॥ एवाचारदेहतेन्याराहोई ॥ हमणामुक्तिमुखणमेसोई ॥ सबव्यापकसउतेन्यारो ॥ विवेकदृष्टि  
 करिविचारो ॥ २० ॥ दोहा ॥ नहिस्थूलसूक्ष्मकारण ॥ नहिंमहाकारणरूप ॥ नहीजाग्रतस्वपनस्रष्टु  
 मीपोतेशब्दस्वरूप ॥ २१ ॥ तुर्यासाक्षिजबकोईकहे ॥ जोसाक्षपदारथहोए ॥ उपाधिरहितस्व-  
 रूपहंनहिसाक्षसाक्षिदोये ॥ २२ ॥ दोहा ॥ विश्वनतेजसप्राज्ञकछु ॥ नहितुर्यातुजमांहि ॥ नहिंदृष्टा  
 साक्षिनहीं ॥ केवलशब्दश्रुभाय ॥ २३ ॥ जहानापिंडब्रह्मांडनहिं ॥ नहि एकतहादोय ॥ प्रद्य  
 त्तिपुरुषजहांनहीं ॥ पोतेस्वयंसदासोय ॥ २४ ॥ वृत्तिव्याप्तिफलव्याप्तिविना ॥ ज्योकोत्यौंस्वरू  
 प ॥ सदाउदितस्वप्रकाशहै ॥ विनुवाणीविनीरूप ॥ २५ ॥ इमअभेदलक्षणकारिरहियेस्वरू  
 प ॥ निरंतरमहदाकाशवत् ॥ पोतेस्वयंस्वरूप ॥ २६ ॥ तत्ववटमराकाशहै ॥ असिपदमहदाकाश  
 वेउपाधिभागत्यागकरि ॥ पोतेस्वयंप्रकाश ॥ २७ ॥ तत्पदउपाधिमाहाकहि ॥ त्वंपदअविद्याजाण ॥ वि

स्वपनअवस्थाकंठस्थान ॥ मध्यमावाचाप्रतिविक्रमोगजाण ॥ ज्ञानशक्तिसत्वगुणमान ॥ उकार  
मात्रातेजसअभिमान ॥ १३ ॥ एवात्रेतीसतत्वजाण ॥ तूंयेनादृष्टाच्छोसंजाण ॥ तूंदृश्यतत्वनिहिं  
ई ॥ न्यारेन्यारोविचारोजोई ॥ १४ ॥ दोहा ॥ घटदृष्टाजोघटनहीं ॥ प्रगदन्यारोदेख ॥ तेंसेदेहदृष्टा  
तूआतमा ॥ न्यारोभिन्नविशेष ॥ १५ ॥ चौपाई ॥ तृतीयकारणदेहअज्ञान ॥ तेंनोतूंदृष्टापोतेस्वरूप  
पज्ञान ॥ तेंथीविलक्षणन्यारोजाण ॥ तेंतूंनहींअनुभवप्रमाण ॥ १६ ॥ स्रुष्टिसिअवस्थाहृदेस्थान ॥  
पश्यतिवाचाआनंदमोगजाण ॥ तमोगुणवरवाणद्वयशक्ति ॥ मकारमात्राप्रज्ञाअभिमान ॥ १५ ॥ ए  
कारणदेहनाआरतत्वकहीं ॥ बीजांतत्वएमानहिं ॥ तूंएनोसाक्षिसच्चिदानंद ॥ नित्यनिरंतरपरमानंद  
॥ १६ ॥ श्लोक ॥ अहंसाक्षीतियोविद्याद्विविधैवंपुनःपुनः ॥ सएवमुक्तःसोविद्वानितिवेदांतडिंडि  
मः ॥ १ ॥ चौपाई ॥ चौथोमहाकारणदेहज्ञानस्वरूप ॥ तेंनोतूंमकाशकशब्दस्वरूप ॥ तेहनातत्वकहं  
वरवाण ॥ तेंतूंअवणकरेदिनकान ॥ १७ ॥ तुर्याअवस्थासूर्दनीस्थान ॥ परावाचाआनंदावभासमोग-  
ज्ञान ॥ इच्छाशक्तीशुद्धसत्वगुणप्रमाण ॥ अर्धमात्राप्रत्यगात्माअभिमान ॥ १८ ॥ एवामलीनेव्या

सीतत्वकहि ॥ तूंएनोजाणतोस्वप्रकाश ॥ अहंब्रह्मास्मियहदृष्टहोई ॥ एजसाक्षात्कारकहियसोई  
॥ १९ ॥ श्लोक ॥ अस्तिब्रह्मेतिचेद्देदपरोक्षज्ञानमेवतत् ॥ अहंब्रह्मेतिचेद्देदसाक्षात्कारःसउच्यते-  
॥ १ ॥ एवाचारदेहतेन्याराहोई ॥ हमणामुक्तिसुखपामेसोई ॥ सर्वव्यापकसजतेन्यारो ॥ विवेकदृष्टि  
करिविचारो ॥ २० ॥ दोहा ॥ नहिस्थूलसूक्ष्मकारण ॥ नहिंमहाकारणरूप ॥ नहींजाग्रतस्वपनस्रु  
मीपोतेशब्दस्वरूप ॥ २१ ॥ तुर्यासाक्षिजबकोईकहे ॥ जोसाक्षपदारथहोए ॥ उपाधिरहितस्व-  
रूपहूनहिसाक्षसाक्षिदीये ॥ २२ ॥ दोहा ॥ विधनतेजसप्राज्ञकछु ॥ नहितुर्यातुजमांहि ॥ नहिदृष्टा  
साक्षिनहीं ॥ केवलशब्दश्रुभाय ॥ २३ ॥ जहानापिंडब्रह्मांडनहिं ॥ नहिएकतहादोय ॥ प्रद्य  
तिपुरुषजहांनहीं ॥ पोतेस्वयंसदासोय ॥ २४ ॥ वृत्तिव्याप्तिफलव्याप्तिविना ॥ ज्योकोत्यौस्वरूप  
प ॥ सदाउदितस्वप्रकाशहैं ॥ विनुवाणीविनीरूप ॥ २५ ॥ इमअभेदलक्षजाणिकरिरहियेस्वरूप  
प ॥ निरंतरमहदाकाशवत् ॥ पोतेस्वयंस्वरूप ॥ २६ ॥ तत्ववटमराकाशहै ॥ असिपदमहदाकाश  
वेउपाधिभागत्यागकरि ॥ पोतेस्वयंप्रकाश ॥ २७ ॥ तत्पदउपाधिमाहाकहि ॥ त्वंपदअविद्याजाण ॥ वे

उपाधिदृश्यत्यागकरि ॥ पोते शुद्ध भगवान् ॥ २८ ॥ जन्म मरण देहनेक हि ॥ क्षुत्पिपासाप्राण ॥ शो  
कमोहमनकोधर्म ॥ पोते ब्रह्मप्रमाण ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ देहने माथे प्रारब्धकर्म ॥ पोते अभोक्ता परब्रह्म  
॥ इमजो जाणे अनुभवयुक्त ॥ तणे कैये जीवनमुक्त ॥ ३० ॥ देहने हं मानेजे कोई ॥ महादोषिक हि ये  
सोई ॥ आत्मबुद्धिजाके भाई ॥ महापुण्यजाणिये ताई ॥ ३१ ॥ श्लोक ॥ देहात्मबुद्धिजपापंनतद्वीवध  
कौटिभिः ॥ आत्माहंबुद्धिजं पुण्यं न भूतो न भविष्यति ॥ १ ॥ तैनेतूंकहेसे देव ॥ तैतूंचैतन्य  
स्वयमेव ॥ बीजो देव मानेजे कोई ॥ एजबंधनतेनेजहोई ॥ ३२ ॥ स्मृति ॥ को देवो यो मनःसाक्षी  
मनोमे दृश्यते मया ॥ तर्हि देवत्वमेवास्मी एको देव इति श्रुतेः ॥ १ ॥ प्रथमवृत्तित्यागकरि दूजिउववान  
यदेह ॥ विचमांनिर्विकल्पदेशानो अभ्यासकीजेसेय ॥ ३३ ॥ श्लोक ॥ नष्टेपूर्वैर्विकल्पे तु यावदन्य-  
स्थनोदयः ॥ निर्विकल्पकचैतन्यं स्पष्टं तावद्विभासते ॥ ३४ ॥ श्रवणमनननिजध्यासकरिकीजसाक्षा  
कार ॥ सच्चिदानंदपरब्रह्म ॥ हंकहतवेदफुकार ॥ ३५ ॥ विषयविषयत्यागकरि ॥ कीजे साधुसंगपोते  
सच्चिदानंदसदाज्योकोयो अभंग ॥ ३६ ॥ श्लोक ॥ सत्संगेन परंप्राप्य दुस्तरंतरतेचिरात् ॥ तस्मादि

तिप्रयत्नेन सत्संगं सततं कुरु ॥ इतिरामकृतपंचीकरणसमाप्तं ॥ ॥ शुकभंभवतु ॥  
श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ आत्मषट्कस्तोत्रप्रारंभः ॥ मनोबुद्ध्यंहंकारचित्तानिनाहंनचश्रोत्रजिह्वे  
नचघ्राणनेत्रे ॥ नचव्योमभूमिर्नतेजोनवायुश्चिदानंदरूपः शिवोहंशिवोहं ॥ २ ॥ नमद्वेषरागौ  
नमेलोभमाहौमदेनेवमैनेवमात्सर्यभावः ॥ नधर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षश्चिदानंद ॥ ३ ॥ नपुण्य  
नपापंनसौरव्यं न दुःखं न मंत्रो न तीर्थं न वेदानयज्ञाः ॥ अहंभोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता चिदानंद ॥  
॥ ४ ॥ नैवमृत्कशंका न मेजाती भेदो पितानैव मेनेव मातानजन्म ॥ नबंधुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यश्चि  
दानंदरूप ॥ ५ ॥ अहंनिर्विकल्पो निराकाररूपो विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वद्विधाणी ॥ सदासमत्वं  
नैव मुक्तिर्नबंधश्चिदानंदरूपः शिवोहंशिवोहं ॥ ६ ॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं आत्म  
षट्कस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ ॥ श्रीशंकरार्पणमस्तु ॥ ॥ शुकभंभवतु ॥ ६ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथकाशीपंचकप्रारंभः ॥ मनोनिवृत्तिः परमोपशान्तिः सातीर्थवग्रोमणि  
कर्णिकाच ॥ ज्ञानप्रवाहामिलादिगंगासाकाशिकाहंनिजबोधरूपा ॥ १ ॥ यस्यामिदं कल्पि  
तमिदं जालं चराचरं भाति मनोविलासं ॥ सच्चित्स्वरूपं परमात्मरूपं साकाशिकाहंनिजबोधरू  
॥ २ ॥ पंचेषु कोशेषु विराजमाना बुद्धिर्भवानी प्रतिगोहोहं ॥ साक्षी शिवः सर्वगतांतरात्मा सा  
काशिकाहंनिजबोधरू ॥ ३ ॥ कस्याहिकाशयते काशीकाशी सर्वमकाशिका ॥ साकाशीवि  
दितायेन तेन प्राप्ता हिकाशिका ॥ ४ ॥ काशीक्षेत्रं शरीरं त्रिभुवनजननी व्यापिनी ज्ञानग  
गा ॥ भक्तिश्रद्धागयेयं निजगुरुचरणध्यानयोगः प्रयागः ॥ विश्वेशीयंतुरीयः सकलजनम  
नः साक्षिभूतांतरात्मा देहे सर्वमदीयेयदिवसतु पुनस्तीर्थमन्यत्किमस्ति ॥ ५ ॥ इति श्री  
शंकराचार्यविरचितं काशीपंचकस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ श्रीकाशिविश्वेश्वरार्पणमस्तु ॥ शक्तं ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ अथकौपीनपंचकप्रारंभः ॥ वेदांतवाक्येषु सदारमंतो भिस्तान्त्रमात्रे-  
ण चतुष्टिमंतः ॥ अशोकवंतः करुणैकवंतः कौपीनवंतः खलु भाग्यवंतः ॥ १ ॥ मूलंतरोः  
केवलमाश्रयंतः पाणिद्वयभोक्तुमपात्रवंतः ॥ कथामपि स्त्रीमिषकुत्सयंतः कौपीनवंतः खलु  
भाग्यवंतः ॥ २ ॥ देहादिभावं परिहृत्य दरादात्मानमात्मन्यवलोकयंतः ॥ नांतर्न मध्यं न  
बहिः स्मरंतः कौपीनवंतः खलु भाग्यवंतः ॥ ३ ॥ स्वानंदभावे परितुष्टिमंतः सशान्ति सर्वे दि  
यवृत्तिमंतः ॥ अहर्निशं ब्रह्मणि येरमंतः कौपीनमंतः खलु ॥ ४ ॥ पंचाक्षरपावनमुच्चरंतः  
पतिपशूनाहृदि भावयंतः ॥ सिद्धाशिनो दिस्तु परिभ्रमंतः कौपीनवंतः खलु भाग्यवंतः ॥ ५ ॥  
॥ इति श्रीशंकराचार्यविरचितं कौपीनपंचकस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ श्रीशंकरार्पणमस्तु ॥ शुभं ॥

हें पंचीकरण, आत्मषट्कस्तोत्र, काशीपंचक, कौपीनपंचक. मुंबईन सरस्वतीमठिकुशीट खातुं याणीं आपले  
शिलार्यंत्र आपरवान्यांत जाविलीं - शके १७९५ मिति माघशुद्ध १२ इंदुवार १० फेब्रुवारी सर १८७३ इ.

॥ इति पंचीकरणं समाप्त ॥